शमशुद्दीन

❑ उमाशंकर शर्मा

नये बच्चों के परिचय क्षेत्र में आते ही सामान्यत: शिक्षक उनकी आदतों और बाह्य कार्यकलापों के आधार पर तुरत-फुरत वर्गीकरण आरंभ कर देते हैं । जल्दी ही शिक्षक के लिए यह आकलन पुख्ता हो जाता है और लगभग आग्रह की हद तक उसके मन में बैठ जाता है । लेकिन शिक्षक का अपने आकलन पर यह विश्वास और पूर्वग्रह शिक्षण की दृष्टि से कितना घातक हो सकता है, इसका कुछ आभास इस शब्द चित्र से मिलता है । बच्चे में अनेक संभावनाएं और क्षमताएं अन्तर्निहित हैं जो समय आने पर प्रस्फुटित होती हैं ।

लगभग एक महीना मुझे ग्रामीण परिवेश से जुड़ी शाला में छोटे बच्चों के समूह के साथ काम करने का मौका मिला। यहां बच्चों की कक्षा नहीं समूह होता है । यहां कालांश का समय 40 मिनिट का होता था, कालांश में विषय के रूप में हिन्दी प्रथम, हिन्दी द्वितीय, पर्यावरण, गणित, अंग्रेजी, व हस्तकार्य पढ़ाये जाते थे । हिन्दी में अक्सर कुछ गतिविधियां करवाई जाती थीं, जिसमें खेल के अलावा गीत, कविता, नाटक, कहानी, मूकाभिनय, एकल अभिनय आदि करवाये जाते थे । एकल अभिनय व मूकाभिनय में बच्चों को परेशानी होती थी ।

कक्षा में दो-तीन बच्चों को छोड़ कर सभी बच्चे सामान्य थे, वे दो-तीन बच्चे कुछ ज्यादा ही शरारती थे उनमें से एक बच्चा था जो शरारती होनें के साथ-साथ पढ़ाई में भी तेज था। उसकी शरारत से मुझे ज्यादा परेशानी इसलिए थी कि वह खुद की पढ़ाई का नुकसान तो करता ही था, साथ ही अन्य बच्चों की पढ़ाई में भी व्यवधान डालता रहता था। उससे कई बार अलग से बिठा कर बात की गई लेकिन ऐसा लगता था शायद यह सब करना उसके स्वभाव में ही हो ।

बिखरे हुए बालों के बीच शरारती चेहरा । उसकी पूरी बाहों वाली शर्ट की बाहें खुली हुई अपने ही हाल में रहतीं। जब भी वह शरारत करते हुए पकड़ा जाता तो मासूम-सी हल्की हंसी से अपनी शरारत को इस तरह छुपा लेता जैसे उसने तो कोई शरारत की ही नहीं ।

उसमें यह अनुशासन तो था कि वह बाकी अन्य बच्चों के साथ अपने हिस्से के काम को ईमानदारी से करता, जैसे सफाई करना, प्रत्येक कालांश के बाद उस विषय की कॉपी-किताब नियत स्थान पर रखकर दूसरे विषय की कापी किताब स्वत: ही नियत स्थान से उठा लेना, शाला से बाहर इजाजत लेकर जाना आदि।

फिर भी उसकी शरारतों के कारण मुझे उससे कोई ज्यादा आशा नहीं थी । एक बात से जरुर संतुष्ट था कि वह अपनी पढ़ाई संबंधी कार्य को अन्य बच्चों से पहले कर लेता था ।

एक दिन हिन्दी में बच्चों को एकाभिनय करना था। लगभग सभी बच्चों ने लघु भूमिका के साथ एकल अभिनय किया, जैसे- खाना खाना, वृद्ध व्यक्ति की तरह चलना, सोना, भागना, रोटी बनाना आदि । इससे मैं संतुष्ट नहीं था । उनमें एकल अभिनय करने की क्षमता तो दिखाई दे रही थी । लेकिन लगता जैसे उन्हें पहले एकल अभिनय का यही मतलब बताया था । मैंने एक लघु कहानी की सहायता से बच्चों को एकल अभिनय करके बताया । बच्चों ने उसे ठीक से समझा और एक-दो बच्चों ने अपनी क्षमतानुसार फिर से एकल अभिनय करके दिखाया ।

बाद में, बच्चों को मैंने एकल अभिनय के लिए विषय कैसे और कहां से लें, यह भी समझाया । मैंने उन्हें बताया कि हम किसी भी लघु कहानी या जो कार्य हम किसी को करते हुए देखते हैं या जो कार्य हमने किसी के साथ किया है उस पर एकल अभिनय कर सकते हैं । इसमें मुख्य बात यह है कि हमें अकेले ही वे सब भूमिका निभानी होती है । जिन्हें देख कर दूसरा व्यक्ति समझ सके कि यह अभिनय द्वारा कौन से दृश्य को प्रदर्शित कर रहा है ।

इसी क्रम में उस शरारती लड़के शमशुद्दीन को एकल अभिनय करने की इच्छा हुई । वह कहने लगा ऐसे तो मैं भी कर सकता हूँ। मुझे विश्वास था कि वह करेगा तो कुछ नहीं बल्कि अन्य बच्चों का समय ही बर्बाद करेगा । लगभग वैसे ही जैसा मैंने सोचा था, वह उठा, समूह के बीच खड़ा हो गया । कुछ देर तक शांत ही खड़ा रहा, फिर इठलाता-सा टहलने लगा । बाद में अपने सिर पर दोनों हाथों से मारने लगा । इस तरह उसने तीन चार बार किया और फिर बैठ गया। जब कोई दूसरा बच्चा उठता उससे पहले वह फिर खड़ा हो जाता यह कहते हुए, मैं अबकी करूंगा । फिर वही दोहराता,

सिर को हाथों से पीटना । मुझे लगने लगा शायद वह बच्चों का समय ही बर्बाद कर रहा है। लेकिन मैं भी यह सोचते हुए उसे देखता रहा आखिर वह करना क्या चाहता है ?

अचानक ही वह कुछ अभिनय जैसा करने लगा जिसे बच्चे पहचानने लगे और बच्चे कहने लगे यह कोई एकल अभिनय थोड़े ही है, यह तो सर्कस देखने गये जब उमाशंकर बच्चों से जो कह रहे थे वो ही तो करके दिखा रहा है । लेकिन उसके इस अभिनय से बच्चे इतना समझ गये, मैं अचंभित हुआ । बच्चों ने जब मुझ से पूछा कि क्या यह एकल अभिनय है ? तो मैंने उसे प्रोत्साहित करते हुए बच्चों से कहा । हां, यह सही कर रहा है। बच्चों ने फिर कहा, यह तो कल जो तू कह रो बाई की नकल कर रो है । मैंने बच्चों को समझाते हुए उसे लगातार जब तक उसकी इच्छा हो करने को कहा।

एक-दो दिन पहले जब शाला के सभी बच्चों को सर्कस दिखाने शहर ले गये थे, जाते समय क्या क्या हुआ, सर्कस में क्या क्या देखा, रास्ते में अध्यापकों ने क्या-क्या निर्देश दिये, ये सब उसने लगभग पूरी कुशलता से अभिनय करके दिखाया। बच्चे उसके अभिनय करते ही तुरंत समझ रहे थे । इसमें उसकी अभिनय क्षमता की सफलता दिखाई दे रही थी । उसने अध्यापक व बच्चों की भूमिका करने के अलावा कई चीजें करके बतायीं । जैसे बस शाला के पास से चलकर शहर में सर्कस के तम्बू के पास जाकर रुकी, वहां बच्चों को किस तरह गिनती करके सर्कस के तम्बू के अन्दर जाने के लिए कहा गया। सर्कस में जितने आइटम दिखाये गये वे पूरे तो नहीं पर लगभग छ: आइटम को उसने अभिनय करके दिखाया। इसमें झूले वाले दृश्य को, कुत्ते द्वारा ढोल पर चलना, रस्सी पर दिखाये गये करतब, जोकर का अभिनय, हाथी द्वारा शिवलिंग की पूजा, दहाड़ मारते हुए शेर का अभिनय आदि सम्मिलित थे ।

उसमें अचानक इतनी अच्छी अभिनय क्षमता को देख मैं सोचने पर मजबूर हो गया कि अभी कुछ समय पहले मेरे मन में इसके लिए कैसे विचार आ रहे थे । मैं बार-बार अपनी गलती को महसूस करते हुए सोचने लगा कि कई ऐसे बच्चे होंगे, जिनकी क्षमता को शिक्षक बहुत कम आंकते होंगे । इससे बच्चों की कई क्षमताएं विकसित नहीं हो पाती होंगी और सृजनात्मकता भी धीरे-धीरे नष्ट होती रहती होगी ।

शमशुद्दीन का शरारती होने के साथ, पढ़ाई में आगे होना, एकल अभिनय में सर्कस जैसे बड़े दृश्य वाले बिन्दु को चुनना व उसे सफल अभिनय के साथ प्रस्तुत करना, यह सिद्ध करता है कि शरारती होने के साथ उसमें स्मरण क्षमता व सृजनात्मक क्षमता की भी कमी नहीं थीं । इससे बच्चों के मन में एकल अभिनय के लिए नई दृष्टि विकसित हुई । यह सब मैंने अन्य शिक्षकों को भी सुनाया।

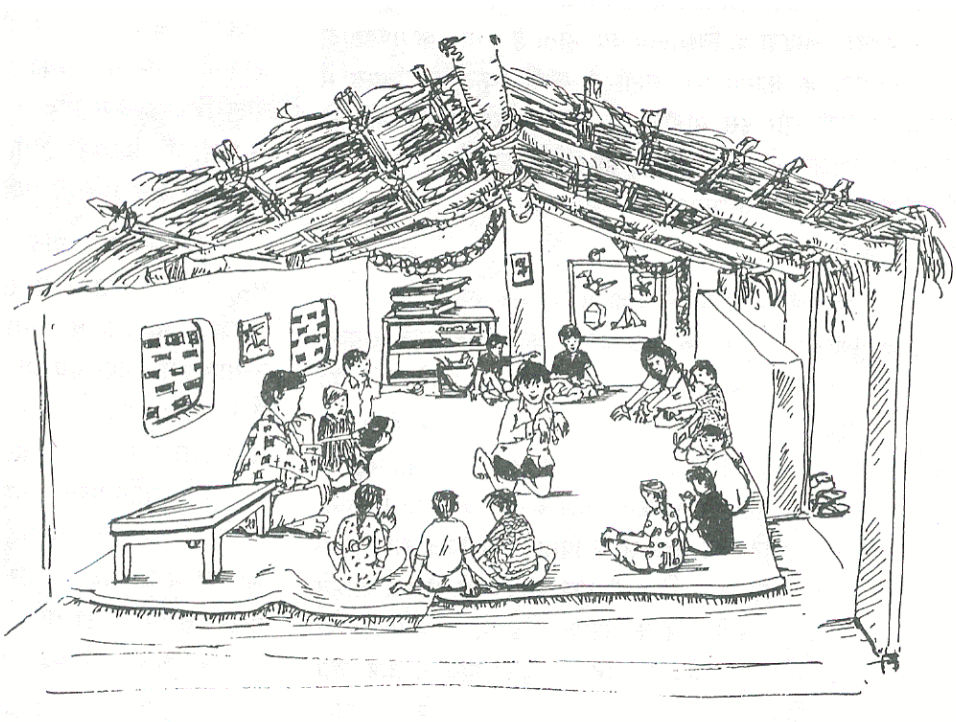

उसके बाद से मैं बच्चों के मनोविज्ञान/मनस्थिति को समझने के लिए हमेशा प्रयासरत रहा, जिससे बच्चों को किसी तरह का कोई नुकसान न हो । इस बात से मैं हमेशा चिंतित होता रहा कि बच्चों के व्यवहार, उनकी आदतों व उनके क्रिया कलापों से, बच्चे के प्रति शिक्षक के मन में स्वत: ही कुछ धारणायें बनने लगती होंगी। उसे पता भी नहीं चलता होगा कि इससे कहीं न कहीं बच्चों की छिपी प्रतिभा/क्षमता आदि सामने आने से रुकेंगी । इससे बच्चों के सहज विकास के लिए हम जो सोचते हैं वह नहीं हो पाता। यह सोचते-सोचते मैंने अपने आपको अपने बचपन में शमशुद्दीन के करीब पाया । ◆